शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2013

बोधिसत्व बाबासाहेब अम्बेडकर की धर्म-क्रान्ति : आधुनिक भारत के संदर्भ में

डॉ॰ मनीष मेश्राम,
सहायक प्राध्यापक,
स्कूल ऑफ बुद्धिस्ट स्टडी एंड सिविलाइजेशन,
गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय,
ग्रेटर नोएडा, यू॰ पी॰

बोधिसत्व बाबासाहेब अम्बेडकर एक कालजयी महापुरुष थे। उन्होंने अपने ही पुरुषार्थ और प्रतिभा से पिछड़ी जाति जाती में उत्पन्न होने के बावजूद व्यकितत्व के सर्वोच्च शिखर को स्पर्श किया था। महा-विद्वत्ता की अगाधता, महा-करुणा की शीतलता और महा-सेवा की गहनता ने उनके व्यक्तित्व को ऐसी विराटता दी कि उनके सभी समकालीन नेता उनके समक्ष बौने-से लगने लगे। सामाजिक असमानता और वर्णाश्रम व्यवस्था ने उनको बुरी तरह प्रभावित किया। अनेक प्रयत्न करने के बावजूद वैदिक धर्म कि कठोर और अमानवीय चहारदीवारी को भेदकर उन्हे समतवादी बौद्धधर्म की शरण लेनी पड़ी। उनका यह अपूर्व कदम उनकी सघन राष्ट्रीयता और एकात्मता का द्योतक है। भारतीय संविधान के शिल्पी होने के नाते उन्होंने इस समतवादी विचारधारा को संविधान की मूल धाराओ में जोड़कर समग्र मानवता के साथ अपने को एकाकार कर लिया है। इसलिये उन्हे सारे विश्व का जो प्यार और सम्मान मिला है वही उनकी उपलब्धि है। डॉ॰ बाबासाहेब ऐसे ही स्वयंभू महापुरुष थे जिन्होंने दलितों के उद्धार में अपनी सारी जिंदगी की आहुति दे दी। उन्होंने प्राचीन मान्यता तथाकथित सामाजिक और धार्मिक परम्पराओं के विरोध में तीखा संघर्ष किया।

डॉ॰ अम्बेडकर कबीरपंथी थे। इसलिए उन्हें परंपरागत वातावरण के भरपूर अनुभव मिला। उस वातावरण में अस्पृश्यता, असमानता, और दरिद्रता का विभत्स्य रूप विकराल मुख लिए खड़ा हुआ था। समाज का हर वर्ग जाति-पांति व्यवस्था में आपादमस्तक मग्न था। चातुर्वर्ण्य ने समाज में कठमुल्लेपन और निकम्मेपन को जन्म दिया। मानसिक तथा आर्थिक गुलामी की जंजीरों में हमारे देश को जकड़ लिया था। और विकास के प्रासाद के चारों ओर अवरोध की इतनी लम्बी प्राचीरों खड़ी कर दी गई कि उनको लांघना एक साधारण व्यक्ति के लिय असंभव-सा बन गया। बाबासाहेब अम्बेडकर ने उस असंभव को अपने साहस, धैर्य, श्रम और प्रतिभा से संभव बना दिया। उन लोहे की दीवारों को अपने फौलादी हाथों सें तोड़कर उन्होंने विकास के स्वर्णिम महलों के कंगूरों को स्वंय ही नहीं छुआ बल्कि अपने पीछे चलने वाली लाखों कि संख्या मे जनता को भी वहां तक पहुंचने का मार्ग प्रशस्त किया, धर्म-पथ दिया उन तथागत बुद्ध ने जिन्होंने आदि-मध्य-अन्त में कल्याणकारी उपदेश किया था, जन-जन के जीवन में नया वसंत लाने का श्रेय प्राप्त किया था और मध्यम मार्ग के माध्यम से सम्यकज्ञान और आचरण का समन्वय करने के लिए प्रज्ञा, शील, समाधि का प्रारूप दिया था।

सर्वप्रथम हमे यह समझने कि अवश्यकता है कि बाबासाहेब को धर्मपरिवर्तन करने कि आवश्यकता क्यों पड़ी ? इसका सबसे बड़ा कारण था वैदिक धर्म का वह घिनौना रूप जिसमें तथाकथित शूद्र वर्ग अथवा अंत्यज पशुओं से भी बदतर स्थिति में अपना जीवन-यापन करते थे। धर्म, आचार और परंपरा के

नामपर समाज में राक्षसी वातावरण बन गया था जहां व्यक्ति न सम्मानपूर्वक जिंदगी बसर कर सकता था और न अपने श्रम और प्रतिभा का उपयोग कर सकता था। गुलामी की दर्दनाक जंजीरों के निमंत्रण के लिये इतना गर्हित वातावरण कम उपयोगी नहीं था। धर्मपरिवर्तन के और भी जो कारण रहे हैं वे सब अस्पृश्यताजन्य है। १९५६ में दिये गये नागपुर के धर्मपरिवर्तन अभिभाषण में हम बौद्ध क्यों बनें ? इस प्रश्न का डॉ॰ बाबासाहेब ने समुचित ढंग से समाधान किया है। अस्पृश्य व्यक्ति सम्मानहीन बन जाता है। बाबासाहेब ने अपने प्रारंभिक जीवन काल मे अनेक बार अपमान के कडवे घूंट पिये थे। सम्मान का जीवन जीना हर इन्सान का जन्मसिद्ध अधिकार है। बिना धर्मपरिवर्तन किये उन्हें यह सम्मानित जीवन दुर्लभ-सा लगा। १९३५ मे येवला मे इसी पृष्ठभूमि मे उन्होंने धर्मपरिवर्तन करने का संकेत किया था।

वैदिक धर्म की कठोर रूढ़ि परंपरा और अमानवीयता के घुटनभरे वातावरण ने बाबासाहेब को विद्रोही बना दिया। उनकी मानसिकता अब पुरातनता से मुडकर नये माहौल में पहुँच गई। कडुवे अनुभवों ने नई ज्योति प्रदान की, ऐसी ज्योति जो अविनीश्वर थी, भास्वर थी, जिसने अपनी स्वच्छ और समक्ष किरणों से तथाकथित शूद्र और अंत्यज समाज को नया जीवनदान दिया, मुक्ति के मार्ग किया। उनका कथन स्मरणीय है – मैंने एक बार ही सदैव के लिए निश्चय कर लिया है कि धर्म छोड़ना है। मुझे धर्मपरिवर्तन के लिए किसी भौतिक लाभ ने नहीं लुभाया है। मेरे धर्मपरिवर्तन में आध्यात्मिक भावना के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। न मेरे आभ्यंतर में हिन्दू धर्म समापाता है और न मेरा स्वाभिमान हिन्दू धर्म से मेल खा पाता है। धर्म मनुष्य के लिए है, मनुष्य धर्म के लिय नहीं।[१] परिस्थितियों ने बाबासाहेब को अपना पुराना धार्मिक चोला उतार फेंकने के लिए विवश तो अवश्य कर दिया पर उनकी प्रकृति मात्र इतने में ही संतुष्ट होनेवाली नहीं थी। वे एक कुशल अध्येता और हेयोपादेयज्ञ थे। उन्होंने लगभग सारे धर्मों का अध्ययन बड़ी गहराई से किया और पाया कि बौद्धधर्म कि शरण ही सच्ची शरण होगी। पर यहा तक पहुँचने में उन्हे काफी यात्रा करनी पड़ी।

बौद्धधर्म की ओर बाबासाहेब का सर्वप्रथम ध्यान आकर्षित करने का श्रेय श्री कृष्णजी अर्जुन केलुस्कर को जाता है जिन्होने १९०७ में उन्हे अपनी लिखी नई मराठी पुस्तक गौतमबुद्ध का जीवन चरित्र भेंट किया। बालक भीमराव ने बड़ी योग्यता के साथ उस वर्ष मेट्रिक पास किया था। इस पुस्तक ने उनके अव्यक्त मन पर एक अद्भभुत छाप छोड़ दी। उन्हें तथागत बुद्ध का जीवन बड़ा आकर्षक लगा। उससे उन्हे उत्साह और साहस मिला अपने नाटकीय जीवन से मुक्त होने का।

धर्मपरिवर्तन की घोषणा :

इसी उत्साह और जीवटता ने डॉ॰ अम्बेडकर को एक आधुनिक बोधिसत्व बना दिया। बहिष्कृत हितकरणी सभा कि स्थापना कर दलितों मे स्वाभिमान को जागृत करने का श्रेय उन्हीं को जाता है। ब्राह्मण समुदाय के विरोध में बम्बई हाईकोर्ट का फैसला दिलाकर उन्होंने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। चौदार तलाब घटना, मनुस्मृति को जलाना, मन्दिर-प्रवेश आदि मामले उनकी महा-शक्ति और प्रज्ञा के परिचायक है। वे ब्राह्मण धर्म और उनकी परंपरागत अमानवीय मान्यताओं के घनघोर विरोधी थे। इसीलिए उन्होंने किसी भी ब्राह्मण कि अपने किसी संघ-समुदाय में स्थान नहीं दिया। इससे हम बौद्धधर्म का प्रभाव उनके चिंतन पर आंक सकते है। हिंदुओं के चिंतन को भी उन्होंने प्रशस्त करने का प्रयत्न किया, पर सफल न होने पर जलगांव (१९२९) और नागपुर (१९३३) दलित सम्मेलनों मे धर्मपरिवर्तन करने का स्पष्ट संकेत दे दिया और फिर १३ ओक्टोबर,१९३५ कि येवला महार परिषद मे यह घोषणा कर दी कि मैं

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2013

हिन्दू पैदा अवश्य हुआ परंतु हिन्दू के रूप मे मरूँगा नहीं। उन्होंने आगे कहा कि हिन्दू धर्म असमानता का धर्म है। छुआछूत उनकी विशेषता है। अस्पृश्य उसके लिय पशु और कुष्ठी से भी अधिक अपवित्र है। उसके छूने से मनुष्य और ईश्वर भ्रष्ट हो जाता है। छुआछूत की समस्या एक वर्गयुद्ध है, हिंदुओं और अछूतों के मध्य एक वर्ग संघर्ष है। अतएव धर्मपरिवर्तन के अतिरिक्त अब उनके पास कोई दूसरा मार्ग शेष नहीं है। जिस प्रकार भारत के स्वराज की अवश्यकता है, वैसे ही अछूतों को हिन्दू धर्म त्यागने कि आवश्यकता है।[२] ज्यों सभी को परस्पर में बांधे वही धर्म है.[३] परंतु हिंदुधर्म मे व्यक्ति के लिए कोई स्थान नहीं है। उसमें वर्ग की कल्पना है। एक वर्ग दूसरे वर्ग के साथ क्या-कैसा व्यवहार करे इसकी उनके पास एक संहिता है। परंतु यह परिभाषा डॉ॰ अम्बेडकर को उचित नहीं लगती। उनकी दृष्टि मे व्यक्ति के जन्म न केवल समाज की सेवा के लिये बल्कि आत्मविकास के लिए भी है। वह धर्म नहीं है जो किसी जाति विशेष के लिए ही बना हो। हिन्दू धर्म में न समानता है और न स्वतन्त्रता। वह तो जातिवादी और अस्पृशयतावादी है।[४] हमारे धर्मांतरण का लक्ष्य है अछूतों के लिए सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक स्वतन्त्रता तथा समानता। धर्मांतरण से यह स्वतंत्रता और समानता मिल जायेगी। मंदिर-प्रवेश आदि के लिए भी संघर्ष करने की कोई अवश्यकता नहीं होगी। राजनीतिक सुविधाएं ही हमारे लिए सब कुछ नहीं है और फिर उनके लिए कोई खतरा भी नहीं है। अत: संगठित होकर धर्मांतर करने का मानस बना चुके थे।

बौद्धधर्म की ओर झुकाव:

बाबासाहेब संस्कृत और पाली के अच्छे विद्वान थे। उन्होंने इन भाषाओं के स्वयं ही अध्ययन किया और उनके मूल ग्रन्थों को पारायण करने किए क्षमता पा ली जो उनके लेखन मे प्रतिबिम्बित होती है। यह आवश्यक इसलिये था कि दोनों संस्कृतयों के मूल ग्रन्थों को पढे बिना आधिकारिक रूप से कुछ भी कहना सरल नहीं होता। वैदिक साहित्य से उचाट और बौद्धधर्म से जुडाव उनके अंतरंग में बढ़ ही रहा था। राजनीतिक हलचल में व्यस्त रहने के बावजूद उन्होंने बड़े ही अध्यवसाय से ऐसे ग्रंथों की रचना की, जिससे ये दोनों तत्व समाज को प्रभावित कर सके। Bombay Chronicle में इसी समय एक समाचार निकाला की अम्बेडकर Magnum Opus नामक एक ऐसी पुस्तक तैयार कर रहे है जो परंपरावादी हिंदुओं के मानस को हिला देगी और उनमें सुधार का आवाहन करेगी।[५] पुस्तक तो शायद नहीं लिखी जा सकी पर रूपरेखा लेख के रूप में अवश्य प्रकाशित हुई जिसमें इस पुस्तक के सात अध्यायों का उल्लेख था। ऐसा लगता है कि बाबासाहेब ने इसे अपने लेखन का आधार बनाकर अनेक पुस्तकें तैयार की। *What Congress and Gandhi Have Done to the Untouchables (1945), The Untouchables (1948) & Riddles of Hinduism (1997)* ऐसी ही पुस्तकें है जिनमें वे अधिकार पूर्वक इस संदर्भ में बहुत कुछ कह सके हैं।

इन पुस्तकों की रचना करते समय वे बौद्ध संस्कृत और पाली ग्रन्थों का भी यथासमय अध्ययन करते रहे और बौद्धधर्म के मर्मज्ञ हो गये। दादा केलुस्कर व्दारा प्रदत बुद्धचरित के अध्ययन का बीज फलित होता रहा। १९४५ में हुई अहमदाबाद कॉन्फ्रेंस में सभास्थल को उन्होंने बुद्धनगर नाम दिया और बाद मे सिद्धार्थ कॉलेज की स्थापना की। १९४८ में लक्ष्मी नरसू की पुस्तक *The Essences of Buddhism* के आमुख में उन्होंने उसकी प्रशंसा करते हुए कहा की वे भी बौद्धधर्म पर प्रामाणिक पुस्तक लिख रहे है। *Who were the Shudras (१९४६)* में डॉ॰ अम्बेडकर ने शूद्रों की स्थिति को स्पष्ट करते हुऐ कहा की शूद्र मूलत: कृष्णवर्णी अनार्य नहीं थे। पहले तीन ही वर्ण थे। विजित तथाकथित शूद्रों को चतुर्थ वर्ण के रूप में स्वीकार किया गया। दोनों वर्णों में संघर्ष इतना अधिक बढ़ा कि

ब्राह्मण वर्ण ने शूद्रों का उपनयन संस्कार भी बंद कर दिया।[६] चातुर्वर्ण्य व्यवस्था का मूल रूप ऋग्वेद के पुरुषसूक्त में उपलब्ध है पर वह वस्तुत: उत्तरकालीन है। हम जानते हैं, सुदास, विश्वामित्र और क्षत्रियों के समर्थक थे। वशिष्ठ और ब्राह्मणिक समुदाय की विजय हो जाने पर सुदास का उपनयन संस्कार बन्द कर दिया गया और उसे तथा उसके समर्थकों को चतुर्थ वर्ण 'शूद्र' के रूप में पहचाना जाने लगा। सुदास सूर्यवंशी क्षत्रिय राजा था इसीलिए शूद्र भी क्षत्रिय थे।[७] छुताछूत की उत्पत्ति के सिद्धान्तों की समीक्षा करते हुये डॉ॰ अम्बेडकर ने कहा कि बिखरे लोग बौद्धधर्म के अनुयायी थे। सांस्कृतिक विरोध होने के कारण ब्राह्मण वर्ग ने उन्हे अछूत बना दिया। इस घृणाभव का फल यह हुआ कि जिस तरह ब्राह्मणों ने अछूतों का बहिष्कार किया उसी तरह तथाकथित अछूतो ने ब्राह्मणो का बहिष्कार किया। पारस्परिक विरोध का एक और कारण था- बलीप्रथा और गो-मांस भक्षण। ब्राह्मणो ने गोमांस भक्षण छोड़ा ही नहीं बल्कि गाय को पवित्र पशु भी मान लिया परंतु अछूत गोमांस का सेवन करते रहे। इसीलिए यह विरोध ब्राह्मण और अछूत बौद्ध समुदाय में और भी गहरा होता गया। इस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में देखा जाये तो वैदिकों एवं अछूतों में कोई जातिभेद नहीं है। जातिभेद का कोई व्यावसायिक आधार भी नहीं है। परिस्थितियों के कारण ब्राह्मणो ने बिखरे लोगों को अछूत और अन्त्यज बना दिया।[८] डॉ॰ अम्बेडकर ने जातिवाद पर अपने विचार प्रकट करते हुए स्पष्टत: कहा: अन्त्यज जाति प्रथा की उपज है। जब तक जाति रहेगी, अन्त्यजों को मुक्ति नहीं मिल सकती। आने वाले विद्रोहों में हिन्दुओ की न कोई मदद कर सकता है और न उन्हे विश्वास दिला सकता है, सिवाय इसके कि हिन्दू धर्म कि गलत बातों की शुद्धि कर दी जाये।

बाबासाहेब ने दृढ़ता से कहा मैंने एक बार ही हमेशा के लिए निश्चय कर लिया है, धर्म छोड़ने के लिए। मेरे धर्मपरिवर्तन की किसी भौतिक लाभ ने प्रोत्साहित नहीं किया है। यहा शायद ही कोई वस्तु हो, जिसे मै प्राप्त नहीं कर सकता, भले ही मै अछूत बना रहूँ। मेरे धर्मपरिवर्तन मे आध्यात्मिक भावना के अतिरिक्त कुछ नहीं है। मेरी अंत:मन में हिन्दू धर्म नहीं समाता। मेरा स्वाभिमान हिन्दू धर्म से मेल नहीं खाता। तुम्हारे लिए धर्मपरिवर्तन सांसारिक, एवं आध्यात्मिक तौर पर आवश्यक है। मै तुम्हें बताता हूँ, धर्म मनुष्य के लिए है, मनुष्य धर्म के लिए नहीं है। यदि तुम संगठित एवं इकट्ठा होना चाहते हो तो संसार में सफल होगे। इस धर्म को बदल दो।[९] बाबासाहेब अपनी सारी जिंदगी भर इसी छूताछूत और कठोर जाति-व्यवस्था से संघर्ष करते रहे। वे इसे हिन्दू वर्ग का एक विषाक्त रोग मानते थे। उन्होंने उसे अमानवीय रोग से मुक्त करने का यथाशक्य प्रयत्न किया पर वे सफल नहीं हो पाये। २ मई १९५० में बौद्ध विहार, नई दिल्ली में बौद्ध जयन्ती के अवसर पर भाषण देते समय उन्होंने कहा की अस्पृश्यता की इस कठोर चहारदीवारी के अन्दर अछूतो का रहना अब मुश्किल है। समाज बिना धर्म के भी रहा नहीं सकता। इसीलिए अछूतों को भी अब परम्परागत धर्म छोड़कर नये धर्म की आवश्यकता होगी। पत्रकरों से बातचीत के दौरान उन्होंने बौद्ध धर्म में दीक्षित होने का विचार भी व्यक्त किया। इसी माह बाबासाहेब श्रीलंका गए और वहाँ बौद्धधर्म का गहराई से अध्ययन किया। लौटने पर जापानी बौद्ध विहार में उन्होंने कहा की बौद्धधर्म एक मात्र धर्म है जो नैतिक सिद्धांतों पर आधारित है और मानव कल्याण की शिक्षा देता है।[१०] इसलिए उन्होंने बौद्धधर्म को भारत में पूर्णव्यवस्थित करने का निश्चय किया बौद्ध विहार, नई दिल्ली (मई १९५१) में भाषण करते समय।[११] जापान-हिन्द संस्कृति परिषद के उपाध्यक्ष एम॰ आर॰ मूर्ति के सम्मान में आयोजित (फरवरी,१९५३) भोज के अवसर पर उन्होंने कहा कि भावी पीढ़ी को अब बुद्ध या कार्लमार्क्स दोनों के सिद्धांतों मे से किसी एक

सिद्धांत को चुनना होगा। इस समय पूर्व पश्चिम की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण हो गया तो यूरोप के मध्य का संघर्ष-इतिहास एशिया मे भी दोहराया जायेगा।[१२] दो माह बाद अपने बासठवें जन्म दिन के उपलक्ष्य में दिये गये सम्मान समारोह के अवसर पर उन्होंने कहा की अब उनका शेष जीवन बौद्धधर्म के प्रचार-प्रसार में बीतेगा।

बाबासाहेब ने 'मेरे निजी दर्शन' कार्यक्रम ३ अक्टूबर १९५४ को आकाशवाणी, दिल्ली से बोलते हुए कहा- मै हिन्दू समाज दर्शन को, जो गीता मे प्रस्तुत किया गया है, पूर्णतः अस्वीकार करता हूँ। 'गीता' सांख्य दर्शन के त्रिगुण सिधान्त पर आधारित है और मेरे विचार में यह कपिल दर्शन का निर्दयी विभाग है। गीता मे जात-पांत प्रणाली और श्रेणीबद्द असमानता को हिन्दू समाज दर्शन का नियम(कानून) बना दिया है। निश्चित रूप से मेरा समाज-दर्शन तीन शब्दों- स्वतन्त्रता, समानता, और भातृत्व भाव पर आधारित है। इससे किसी को कोई भ्रम न बना रहे कि मैंने यह दर्शन फ्रान्स-क्रान्ति से लिया है। मैंने ऐसा नहीं किया। मेरे दर्शन की जड़े धर्म में है न, की राजनीतिविज्ञान में। मैंने यह दर्शन अपने गुरु बुद्ध की शिक्षाओं में से निकाला है।[१३] डॉ॰ अम्बेडकर का यह न्यायिक कथन उनकी विद्वत्तापूर्ण पुस्तक भगवान बुद्ध और उनका धर्म से भी भली-भांति सिद्ध होता है।

येवला कॉन्फ्रेंस में घोषित विचार को कार्य रूप में परिणित करने के लिए बाबासाहेब को लगभग बीस वर्ष लग गये। यह समय उन्होंने कदाचित कॉंग्रेस और ब्राह्मण वर्ग को दिया होगा यह सोचकर की यदि अस्पृश्यता और जात-पांत का सिद्धांत वैदिक समाज से जड़-मूल से निकाल जाता है तो शायद वे धर्मांतर नहीं करेंगे। परंतु, दुर्भाग्य से उसमे कोई मानसिक परिवर्तन नहीं आया। बाबासाहेब शायद यह जानते भी थे तभी तो उन्होंने इस बीच बौद्धधर्म का अध्ययन किया और वैदिक धर्म के घृणित रूप को सामने ले आये। बौद्धधर्म के अध्ययन के बाद वे उस ओर झुके, उसके प्रचार-प्रसार के साधन खोजे और धर्मांतर के तरीके पर विचार किया। वे चाहते थे की धर्मांतर मात्र कहने के लिए न हो बल्कि समुचित और व्यवस्थित रीति से हो। तदर्थ उन्होंने 'बौद्ध पूजापाठ' नामक एक पुस्तिका भी तैयार की। बाबासाहेब शारीरिक दृष्टि से अशक्त होते जा रहे थे पर मानसिक दृष्टि से उनमे उत्साह हिलोरें ले रहा थे। १९५६ तक उनकी पुस्तक दी बुद्ध एंड हिज धर्म का लेखन कार्य किसी तरह समाप्त हो गया और १५ मार्च को उसकी भूमिका भी तैयार कर ली गई। मई में बीबीसी से वाइ आइ लाईक बुद्धिज़्म वार्ता प्रसारित हुई. इसी माह दी बुद्धा एंड हिज धर्म पुस्तक प्रेस मे दे दी गई और उसकी कुछ प्रतियाँ बौद्ध विद्वानों के पास समीक्षार्थ भिजवा भी दी गई। २४ मई १९५६ का दिन श्रीलंका कलेंडर के अनुसार बौद्धधर्म का २५०० वां परिनिर्वाण दिवस था। वे बंबई आये और नरे पार्क में बुद्ध जयंती के अवसर पर यह घोषणा कर दी कि वे १४ अक्टोबर, १९५६ को विजया दशमी के दिन बौद्धधर्म ग्रहण करेंगे। इसी समय उन्होंने वैदिक धर्म और बौद्धधर्म के अंतर को भी स्पष्ट किया और स्वयं की तुलना मूसा के साथ की जो अपने लोगों को ईरान से निकालकर फिलिस्तीन की स्वतंत्र भूमि पर ले गया था।

धर्म-क्रान्ति का प्रभाव :

१४ अक्टूबर का दिन विजयदशमी पर्व के रूप में परंपरा का सोहागा दिन था सत्य की विजय का प्रतीक, दासता की मुक्ति का संदेश वाहक, मानवता का आवाहक, अशोक सम्राट का विजय दिन और कदाचित उसके धर्मांतर के पर्व (धर्म-विजय), अंधेरे से उजाले मे आने का प्रकाश पर्व, ब्राह्मण धर्म को फौलादी अमानवीय दासता की बेड़ियों से मुक्त होने का पर्व। बाबासाहिब के अनुयायियों के लिए यह दिन यथार्थ में मुक्ति पर्व था। इसीलिए चारों और उत्साह और उमंग का वातावरण अंगड़ाई ले रहा था। श्रद्धानंद पेठ में

स्थित चौदह एकड़ का क्षेत्र 'दीक्षा' के लिए तय किया गया और उसे ऐसा सुसज्जित किया जैसे तथागत बुद्ध का स्वागत करने उस समय की प्रजा ने ही विशाल पंडाल बनाया हो और अनार्य नाग वंशीय बौद्ध जन समुदाय उनके स्वागत के लिए एकत्रित हुआ हो।[१४] सर्वप्रथम बाबासाहेब के पिताजी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए दो मिनट का मौन धारणकर कृतज्ञता ज्ञापन की गई और सफेद सिल्की धोती और कोट पहने बाबासाहेब को महास्थविर चंद्रमाणी ने त्रिशरण तथा पंचशील प्रदान कर बौद्धधर्म में दीक्षित किया।

बौद्धधर्म के इतिहास में कदाचित यह प्रथम उदाहरण है जबकि किसी उपासक ने लोगों को दीक्षित किया हो और पृथक रूप से उन्हे अपनी २२ प्रतिज्ञाएं दी हो। इन प्रतिज्ञाओं को धर्मपरिवर्तन का अंग बनाकर बाबासाहेब ने एक नई निष्ठा पूर्ण परंपरा का निर्माण किया। यह आवश्यक इसलिए था कि शताब्दियों से संस्कार इसके बिना खंडित नहीं हो पाते और फिर पारमार्थिकता की पकड़ भी पुराने आवरण की छोड़े बिना सघन नहीं हो पाती। वैदिक कर्मकाण्ड को भुलाये बिना बौद्ध-साधना हो भी कैसे सकती ? श्रमण संस्कृति वैदिक ईश्वरवाद को बिलकुल स्वीकार नहीं करती। बाबासाहेब ने इसी को 'धर्मदीक्षा' कहा है। इस धर्मदीक्षा से धर्मपरिवर्तित लोग बौद्ध आध्यात्मिक समुदाय के आधिकारिक सदस्य हो गए और बौद्ध भिक्षु के समान बौद्धधर्म का पालन करने वाले बन गये। इस ऐतिहासिक अवसर पर बाबासाहेब ने बड़ा महत्वपूर्ण भाषण दिया जो हम बौद्ध क्यो बने शीर्षक से बाद में प्रकाशित भी हुआ। इस धर्मदीक्षा से मैं अनुभव करता हूँ जैसे में नर्क से मुक्ति पा गया हूँ। जीवन को सुव्यवस्थित करने के लिए स्फूर्ति, उत्साह और स्वस्थ शरीर की आवश्यकता होती है जो दरिद्रता और चातुर्वर्ण्य सिद्धांत के कारण छिन्न-भिन्न हो गया। आचरण और व्यवहार की दृष्टि से अब हमे बौद्धधर्म को जीवन मे उतारना होगा। आप ऐसा जीवन जिये कि जिससे आप सम्मान अर्जित कर सकें। अब हर बौद्धधर्मलम्बी व्यक्ति को अन्य लोगों की भी बौद्धधर्म में दीक्षित करने का अधिकार है। यहाँ यह भी ध्यातव्य है की बाबासाहेब ने धर्मपरिवर्तन के दो दिन बाद प्रैस कॉन्फ्रेंस मे कुछ तथ्यों का स्पष्टीकरण किया था। उन्होंने कहा था की उनका बौद्धधर्म भगवान बुद्ध की मूल शिक्षाओं पर आधारित रहेगा। हीनयान-महायान जैसे भेदों से उनको कोई मतलब नहीं है। उनके बौद्धधर्म को 'नवयान कहा जा सकता है जो पारंपरिक बौद्धधर्म से बुलकुल भिन्न नहीं होगा। वह कुछ नहीं, सिर्फ बौद्धधर्म होगा।[१५]

आज संसार के अनेक भागों में लोग अपने जीवन के सभी अंगो में अधिक हितकारक परिवर्तन चाहते है किन्तु उस ओर बढ़ने के लिए उन्हे ठीक रास्ते का पता नहीं है। कुछ लोग हिंसा के जरिये परिवर्तन लाना चाहते है, कुछ धन-संपाति द्वारा या विज्ञान और तकनीक द्वारा और फिर शिक्षा द्वारा परिवर्तन लाना चाहते है। किन्तु उन्हें ठीक सफलता नहीं मिलती है। कभी कभी उन्हे सफलता मिलती ही नहीं, और वे बेहालत कर डालते है। बाबासाहेब का सामूहिक बौद्ध धर्म स्वीकार का आंदोलन संसार के सामने एक ऐसी क्रान्ति का उदाहरण प्रस्तुत करता है, जो क्रान्ति वास्तव में सफल हुई। यह आंदोलन एक धर्मक्रांति का उदाहरण है- ऐसी क्रान्ति का जो शांतिपूर्ण तरीके से की गई है। अब जब मै कहता हूँ, कि धर्मक्रांति सफल हुई, तब मेरे मतलब यह नहीं की वह पूर्ण रूप से सफल हुई है। स्पष्ट है कि वास्तविकता कुछ ओर है। मेरा मतलब यह है, कि बहुत प्रमाण में सफल हुई है। अर्थात बहुत प्रमाण में, लाखों लोगों के जीवन को शांतिपूर्ण तरीके से धर्म के द्वारा पूरी तरह बदल देने में, वह सफल रही है। इस प्रकार सामुदायिक धर्म-परिवर्तन का आंदोलन, जिसका उदघाटन डॉ॰ अम्बेडकर ने किया था, समस्त विश्व के लिए बहुत ही

बड़ा महत्व रखता है। वह सारे विश्व को सही दिशा दिखलाता है। सामूहिक धर्म परिवर्तन का प्रतिनिधित्व करने के अतिरिक्त हितकारक परिवर्तन का भी प्रतिनिधि था। वह सर्वव्यापी प्रगति का सर्वव्यापी विकास का प्रतिनिधि था। इसलिए इसे हम केवल बाबासाहेब का बौद्ध धर्म के स्वीकार का आंदोलन नहीं कहते, किन्तु इसे हम बोधिसत्व बाबासाहेब की धर्मक्रांति कहते है।

फिलहाल दुनिया के डॉ. भागों मे बौद्ध धर्म सचमुच ही उन्नति के पथ पर है। ये है, पश्चिम मे विशेषकर इंग्लैंड और भारत में विशेषकर महाराष्ट्र। स्वाभाविक ही है, की महाराष्ट्र की प्रगति इंग्लैंड की प्रगति से काफी ज्यादा है। यह स्तुत्य है, यहाँ महाराष्ट्र में सामुदायिक धर्म परिवर्तन के आंदोलन के कारण, जिसका उदघाटन बाबासाहेब ने किया, इन कुछ वर्षो मे लाखों व्यक्ति बौद्ध बन चुके है। इस तथ्य का केवल भारत के लिए ही नहीं, अपितु, सम्पूर्ण बौद्ध जगत के लिए महत्व है। इस तथ्य का अर्थ केवल इतना ही नहीं है, की बौद्ध धर्म का भारत मे छः या सात सौ वर्षोके पश्चात पुनर्जागरण हुआ है। सच्चा अर्थ इससे अधिक व्यापक है। इसका ठीक अर्थ यह है, की अब बौद्ध धर्म अवनति की दिशा में और अधिक नहीं बढ़ रहा है। अवनति की प्रक्रिया अब रुक गई है, पलट गई है। अब बौद्ध धर्म विकास की ओर पुनःउन्मुख हो गया है। इसीलिए बौद्ध धर्म में सामुदायिक परिवर्तन के आंदोलन का जिसका उदघाटन बाबासाहेब ने किया, केवल बौद्ध धर्म के लिए ही महत्व नहीं है, अपितु, समस्त बौद्ध जगत के लिए भी उसका महत्व है। सच देखा जाय तो समस्त बौद्ध जगत के लिए यह एक आशा का संदेश है। यह बतलाता है, की बौद्ध धर्म कभी लुप्त हो भी जाय और लुप्त हो कर सैकड़ो वर्षो के पश्चात भी वह फिर जीवित हो सकता। बाबासाहेब के सामूहिक धर्म परिवर्तन के आंदोलन का इसलिए सम्पूर्ण बौद्ध धर्म के इतिहास मे एक विशेष महत्वपूर्ण स्थान है। यह एक महान युग प्रर्तक घड़ी है। ऐसी घड़ी- जहाँ से बौद्ध धर्म पुनः विकास की दिशा की ओर उन्मुख हुआ, जहाँ से उसने अपने ऐतिहासिक अस्तित्व में एक नये रूप को धारण किया- ऐसा रूप जो अतीत के किसी भी रूप से अधिक गौरवमय हो सकता है। इसीलिए सम्पूर्ण बौद्ध-जगत मे बाबासाहेब की धर्म-क्रान्ति को आधुनिक भारत के बोधिसत्व स्वरूप में सम्बोधित किया जाता है।

संदर्भ:

1. *मुकनायक*, पहला अंक, १९२०
2. *B.G. Kunte, Source material on Dr. Ambedkar and the movement of Untouchable, Vol.1,Bombay, 1982, p.137-140*
3. डॉ॰ अम्बेडकर, *अनहिलेशन ऑफ कास्ट*, पृ.८१॰
4. डॉ॰ अम्बेडकर, *बुद्ध अँड हिझ धम्मा*, पृ.१७७॰
5. *B.G. Kunte, Source Material on Dr. Ambedkar and the Movement of Untouchables, Vol.1, Bombay, 1982, p॰171॰*
6. *Dr॰ Ambedkar, Who were the Shudras, Bombay, 1946, p.XV॰*
7. वही॰
8. *Dr॰Ambedkar, The Untouchables, p.73-82॰*
9. कीर, धनंजय, *डॉ॰अम्बेडकरः लाइफ एवं मिशन*, पृ॰ २७४॰
10. *B.G. Kunte, Source Material on Dr. B.R॰ Ambedkar and the Movements of Untouchables, Vol.1, Bombay, 1982, p॰366॰*
11. *B.G.Kunte, Source Material on Dr.B.Ambedkar and the Movements of Untouchables, Vol.1, Bombay,1982, p॰274॰*
12. वही॰ पृ.४०६॰
13. कीर, धनंजय, *डॉ॰अम्बेडकरः लाईफ अँड मिशन*, पृ.४५६॰
14. वही॰ पृ.४९५॰
15. संघरक्षित, *अम्बेडकर अण्ड बुद्धिज़्म*, पृ॰१३१॰